BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA

हिंदी

DATE: 29-09-20

Greetings

Dear Students,

Hope that your online learning process fills you with energy and enthusiasm.

Here is your daily PDF lesson for today.

Subject Covered: हिंदी

TOPIC

- उलटे अर्थ वाले शब्द -विलोम शब्द
- पाठ- 8 अब हम दोस्त हैं
- ज्ञान सुधा पुस्तक - कहानी 7 सच्ची लड़की

SUBTOPIC

- उलटे अर्थ वाले शब्द -विलोम शब्द उदाहरण शब्दों का लिखित कार्य|
- पाठ- 8 अब हम दोस्त हैं
- मेरा प्रिय मित्र /सहेली पर वाक्य लेखन |
- कहानी 7 सच्ची लड़की का पठन पाठन |

Learning Outcomes:

- विद्यार्थी उलटे अर्थ बताने वाले शब्द (विलोम शब्द) की अवधारणा को समझते हुए उदाहरण शब्दों को लिखने में सक्षम होंगे |
- विद्यार्थी दिए गए विषय पर अपनी रचनात्मकता का प्रयोग करते हुए पाँच पंक्तियाँ लिखने में सक्षम होंगे |
- ज्ञान सुधा पुस्तक के अंतर्गत कहानी 7 सच्ची लड़की का पठन पाठन करने में सक्षम होंगे तथा कहानी का आनंद लेंगे |

Instructional Aids DAILY PDF, CONNECTED CLASSROOMS,YOU TUBE LINKS

Lesson development:

TASK 1: विद्यार्थी उलटे अर्थ बताने वाले शब्द (विलोम शब्द) की अवधारणा को समझते हुए उदाहरण शब्दों का लिखित कार्य कार्य पत्रिका में करेंगे |

Where to do ?: हिंदी अभ्यासपत्रिका (notebook)

TASK 2 पाठ- 8 अब हम दोस्त हैं

के अंतर्गत मेरा प्रिय मित्र /सहेली पर पाँच वाक्य स्वयं लिखने का अभ्यास कार्य पत्रिका में करेंगे |

Where to do ?: हिंदी अभ्यासपत्रिका (notebook)

TASK 3 : ज्ञान सुधा पुस्तक के अंतर्गत कहानी 7 सच्ची लड़की का पठन पाठन करने में सक्षम होंगे तथा कहानी का आनंद लेंगे |

Where to do ?: ज्ञान सुधा पुस्तक

😊 **NOTE:**

1. Keep revisiting the previous modules and concepts along with the new ones.

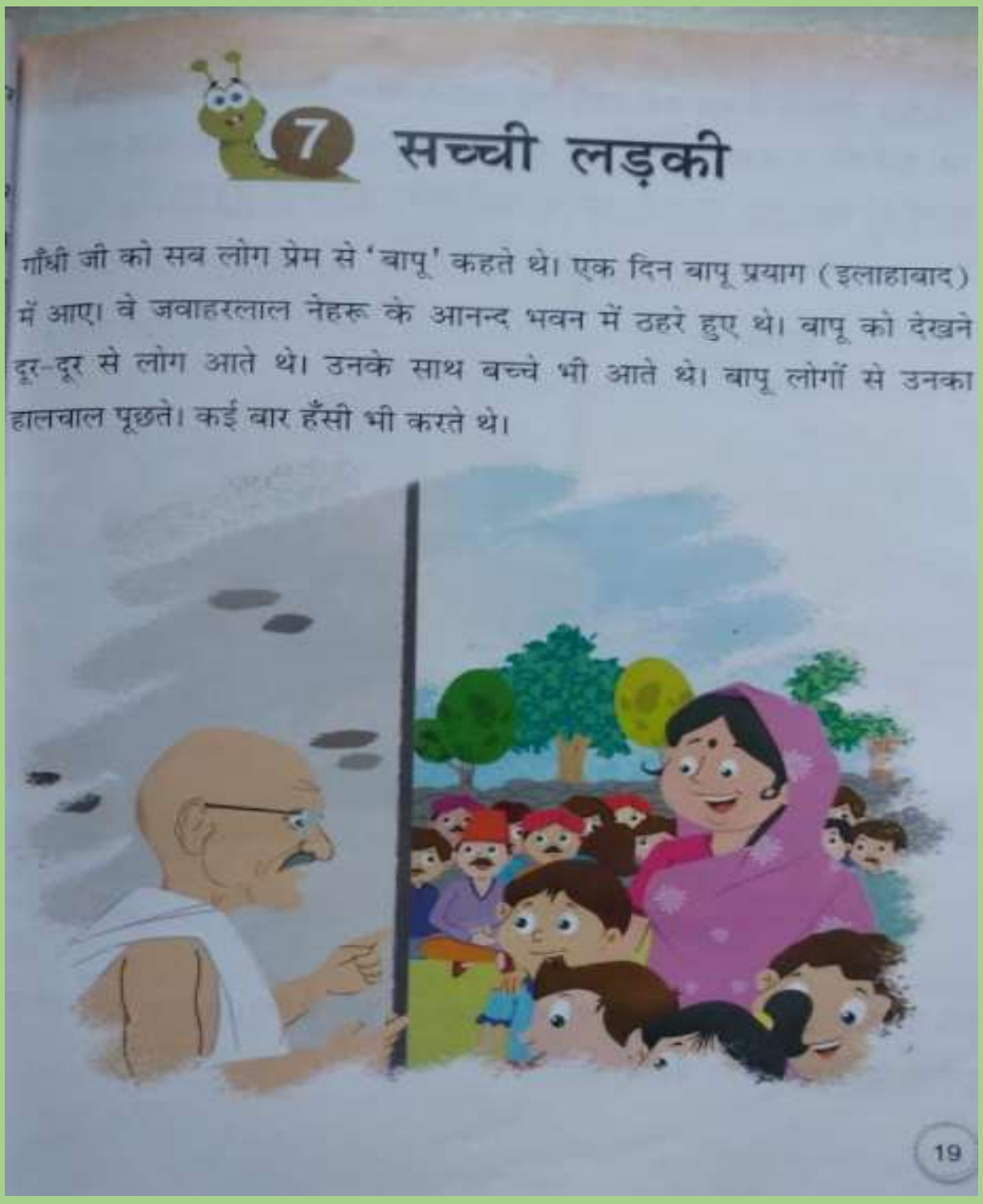

7 सच्ची लड़की

गाँधी जी को सब लोग प्रेम से 'बापू' कहते थे। एक दिन बापू प्रयाग (इलाहाबाद) में आए। वे जवाहरलाल नेहरू के आनन्द भवन में ठहरे हुए थे। बापू को देखने दूर-दूर से लोग आते थे। उनके साथ बच्चे भी आते थे। बापू लोगों से उनका हालचाल पूछते। कई बार हँसी भी करते थे।

19

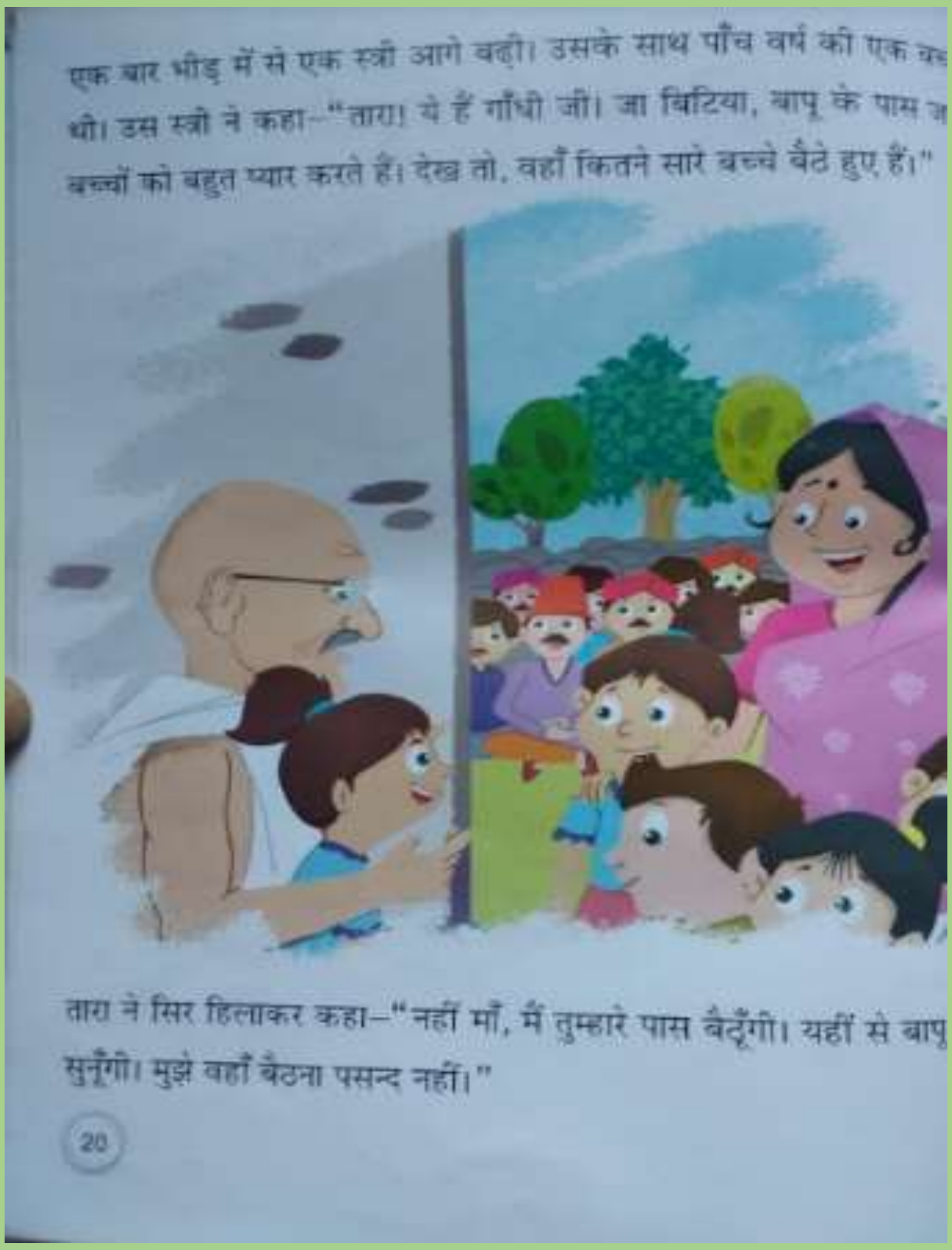
एक बार भीड़ में से एक स्त्री आगे बढ़ी। उसके साथ पाँच वर्ष की एक ब
थी। उस स्त्री ने कहा–"तारा! ये हैं गाँधी जी। जा बिटिया, बापू के पास ज
बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। देख तो, वहाँ कितने सारे बच्चे बैठे हुए हैं।"
तारा ने सिर हिलाकर कहा–"नहीं माँ, मैं तुम्हारे पास बैठूँगी। यहीं से बापू
सुनूँगी। मुझे वहाँ बैठना पसन्द नहीं।"
20

माँ ने चकित होकर पूछा–"क्यों बेटी, तुझे वहाँ बैठना क्यों पसन्द नहीं?"

तारा ने कहा–"माँ! बापू तो बिल्कुल भी सुन्दर नहीं हैं।"

पुत्री की बात सुनकर माँ क्रोध से लाल हो गई। उसने कहा–"बिटिया! तू कितनी मुँहफट है। जो मुँह में आता है, बक देती है, तुझे इसका दंड मिलेगा।"

बापू ने उनकी बातें सुन लीं थीं। वे खिल-खिलाकर हँस पड़े। कहने लगे–"नहीं, नहीं, इसको दण्ड नहीं मिलेगा। इसने झूठ नहीं कहा। मैं तो सत्य बोलने वालों से प्यार करता हूँ। आओ बेटी, डरो मत, इधर आओ।"

जब तारा पास आ गई, तो बापू ने कहा–"देखो मेरे कितने बड़े-बड़े कान हैं। मेरी नाक कितनी भद्दी है। मैं कभी भी अपना मुँह दर्पण में देखना पसन्द नहीं करता।"

यह सुनकर वहाँ बैठे सभी लोग हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। बापू ने तारा को गोद में उठा लिया। फिर पूछा–"क्यों तुम्हारा नाम तारा है न? वही तारा जो रात को चमका करता है।"

यह सुनकर तारा भी हँसते-हँसते लोटपोट हो गई। कहने लगी–"माँ! गाँधी जी बहुत अच्छे हैं। ये बहुत हँसाते हैं।"